Dated 24/08/2020

B.A Part 1 Philosophy

डॉ० मनीषा कुमारी गुप्ता
जे० के० कॉलेज बिरौल

Date / / Page

शंकर का अध्यास या अविद्या

शंकर के दर्शन में माया और अविद्या का प्रयोग एक ही अर्थ में हुआ है था। उनका मानना है कि जिस प्रकार आत्मा और ब्रह्म में तादात्म्य है, उसी प्रकार माया और अविद्या अभिन्न है। परन्तु बाद के कुछ दार्शनिकों ने माया और अविद्या में भेद कर दिया है। शंकर का मानना है कि "अध्यास किसी वस्तु का किसी अन्य वस्तु के रूप में ज्ञान है। आचार्य ने अध्यास का दूसरा लक्षण यह बतलाया है कि "अध्यास किसी अन्य वस्तु का किसी अन्य वस्तु के धर्म के रूप में अवभासित होता है। अर्थात प्रत्येक वस्तु में द्रव्यांश और धर्मांश दोनों होते हैं। एक वस्तु के 'द्रव्य' पर किसी अन्य वस्तु के 'धर्म' को आरोपित करना अध्यास है। जैसे - रज्जु के द्रव्यांश पर सर्पत्व धर्म का आरोप। एक और लक्षण के अनुसार आचार्य कहते हैं और जब हम उस वस्तु से कुछ हद तक साम्य रखनेवाली दूसरी वस्तु देखते हैं तो पहले वस्तु का गुण-धर्म जो हमारी स्मृति में होते हैं वह दूसरी वस्तु पर आरोपित हो जाता है, जिससे हमें भ्रम हो जाता है। परन्तु जब प्रकाश यानि (ज्ञान) में हम इसका निरीक्षण करते हैं तो यह भ्रम टूट जाता है और हमें वास्तविक ज्ञान की प्राप्ति हो जाती है।

अतः निष्कर्ष के तौर पर यही कहा जा सकता है कि स्वप्रकाश चैतन्यस्वरूप परमतत्व अविद्या के कारण जीव के रूप में भासित होता है और जब इस परमतत्व पर अनात्मा तथा देह-इन्द्रिय और अनात्माओं का अध्यास माया के कारण हो जाता है, तब शुद्ध चैतन्यस्वरूप परमतत्व जीव या प्रमाता के रूप में प्रतीत होने लगता है। यही अध्यास या अविद्या है, परन्तु ब्रह्मज्ञान के द्वारा हम इसके वास्तविक स्वरूप को जान जाते हैं। शंकर ने त्रिविध सत्ता के बारे में बताया है
(i) प्रतिभासिक सत्ता (ii) व्यवहारिक सत्ता (iii) पारमार्थिक सत्ता
शंकर के अनुसार स्वप्न में दिखाई देनेवाले विषयों की सत्ता को प्रतिभासिक सत्ता कहते हैं। दूसरा जगत में जागृत अवस्था में दिखाई देने वाली समस्त वस्तुओं की सत्ता को व्यावहारिक सत्ता कहेंगे। व्यावहारिक सत् जब तक मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती, तब तक हमारे सारे कर्मों में व्यवहार रूप में सत्य प्रतीत होता है। तीसरा पारमार्थिक सत्ता शाश्वत, सम्पूर्ण एवं सर्वोपरि सत् है। यह कभी खंडित नहीं हो सकता है।

—x—